Ministry of Culture
Government of India

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का चौथा दिन

तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ
हमारे महाकाव्य जीवन के प्रति अधिक विविधता के साथ विचार करने का अवसर देते हैं – आशीष नंदी
महाकाव्यों ने देश की आम जनता को भी जाग्रत किया है – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
अखिल भारतीय कवि सम्मिलन, नाट्य लेखन पर परिचर्चा, एलजीबीटीक्यू लेखक सम्मिलन, नारी चेतना एवं लेखक से भेंट कार्यक्रम भी हुए संपन्न
सांस्कृतिक कार्यक्रम में हुई क़व्वाली की प्रस्तुति

नई दिल्ली। 14 मार्च 2023; साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव के चौथे दिन का मुख्य आयोजन 'महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र निर्माण' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी थी, जिसका उद्घाटन वक्तव्य लब्धप्रतिष्ठ हिंदी लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया। बीज वक्तव्य प्रख्यात सामाजिक सिद्धांतकार एवं आलोचक आशीष नंदी ने दिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने की और समापन वक्तव्य उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने दिया।

हमारे दोनों महाकाव्य 'रामायण' और 'महाभारत' में हमारी स्वतंत्रता के प्रेरक तत्त्व समाहित हैं। महात्मा गाँधी जहाँ 'रामायण' (तुलसी का 'रामचरितमानस') से प्रेरणा लेते हैं तो बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिनचंद्र पाल, 'गीता' से प्रेरणा लेते हैं जोकि 'महाभारत' का ही एक अंग है। उक्त बातें लब्धप्रतिष्ठ हिंदी लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन वक्तव्य में कहीं। आगे उन्होंने कहा कि 'सत्याग्रह' और 'स्वराज' जो गाँधी के सबसे बड़े शस्त्र थे, वे तुलसीदास की रामचरितमानस के माध्यम से उन तक पहुँचते हैं। बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात सामाजिक सिद्धांतकार एवं आलोचक आशीष नंदी ने कहा कि समाज की आंतरिक संवेदना हमारे महाकाव्यों में ही संरक्षित है। हमारे महाकाव्य जीवन के प्रति अधिक विविधता के साथ विचार करने का अवसर देते है। अपने संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि इन दोनों महाकाव्यों में हमारी जातीय स्मृतियाँ संरक्षित हैं। समापन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि भारत की आंतरिकता इन दोनो महाकाव्यों में बसती है। संगोष्ठी के दो अन्य सत्र हरीश त्रिवेदी एवं एस.आर. भट्ट की अध्यक्षता में संपन्न हुए।

आज अन्य कार्यक्रमों में नाट्य लेखन पर हुई परिचर्चा का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ अभिनेता मोहन अगाशे ने किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि नाटक लिखना और इसको प्रस्तुत करना दोनों अलग–अलग हैं। उन्होंने शब्दों की पूरी यात्रा का खाका खींचते हुए कहा कि अब शब्द हमारे साथ लगातार बने रहते है और उनसे हमें कितना और कैसा संबंध रखना है यह कोई और निर्धारित करता है। अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि विजय तेंदुलकर का लिखा हुआ नाटक 'घासीराम कोतवाल' मात्र 39 पृष्ठों में है। लेकिन लेखक ने उसको प्रस्तुत करने के कितने सुझाव टिप्पणी के रूप में दिए हैं, हर किसी को इसे प्रस्तुत करने की नई दृष्टि और समझ मिल जाती है। आगे उन्होंने कहा कि अच्छा लिखने, अच्छा देखने और अच्छा प्रस्तुत करने के लिए समस्त ज्ञानेंद्रियों का संतुलन आवश्यक है। इस परिचर्चा के अन्य सत्रों में दयाप्रकाश

सिन्हा और टी.एम. अब्राहम की अध्यक्षता में चंदन सेन, के.वाई. नारायणस्वामी, अभिराम भड़कमकर, दीवान सिंह बजेली तथा डी. श्रीनिवास ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। आज एलजीबीटक्यू लेखक सम्मिलन और 'एक पृथ्वी. एक परिवार. एक भविष्य विषय' पर अखिल भारतीय कवि सम्मिलन भी आयोजित किया गया। कवि सम्मिलन की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि एवं विद्वान लीलाधर जगूड़ी ने की और इसमें 24 भारतीय भाषाओं के महत्त्वपूर्ण कवियों ने भाग लिया। पिछले दिन से जारी आदिवासी लेखक सम्मिलन आज संपन्न हुआ, जिसमें लगभग 30 वाचिक भारतीय भाषाओं के लेखकों ने भाग लिया। 'नारी चेतना' विनीता अग्रवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें 8 महिला रचनाकारों ने भाग लिया। 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम में आज प्रख्यात मैथिली और हिंदी लेखिका उषाकिरण खान ने अपनी रचना–यात्रा और रचना–प्रक्रिया पर वक्तव्य दिया। उन्होंने श्रोताओं के प्रश्नों का समुचित उत्तर भी दिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत गुलाम वारिस निज़ामी अकबर (निज़ामी ब्रदर्स) द्वारा क़व्वाली प्रस्तुत की गई।

(के. श्रीनिवासराव)